

श्रीसीताराम गीतम्

{ श्रीसीताराम गीतम् }

कमल लोचनौ राम कंचनाम्बरौ

कवचभूषणौ राम कार्मुकान्वितौ

कलुषसंहरौ राम कामितप्रदौ

रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ १ ॥

मकरकुण्डलौ राम मौलिसेवितौ

मणिकिरीटिनौ राम मञ्जुभाषिणौ

मनुकुलोद्भवौ राम मानुषोत्तमौ

रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ २ ॥

सत्यसम्पन्नौ राम समरभीकरौ

सर्वरक्षणौ राम सर्वभूषणौ

सत्यमानसौ राम सर्वपोषितौ

रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ ३ ॥

धृतशिखण्डिनौ राम दीनरक्षकौ

धृतहिमाचलौ राम दिव्यविग्रहौ

विविधपूजितौ राम दीर्घद्वैयुगौ

रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ ४ ॥

भुवनजनुकौ राम पादधारिणौ

पृथुशिलीमुखौ राम पापनाशिघ्नकौ

परमसात्विकौ राम भक्तवत्सलौ
रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ ५ ॥

वनविहारिणौ राम वल्कलांबरौ
वनङ्गलाशिनौ राम वासवार्चितौ ॥
वरगुणाकरौ राम वालिमर्दनौ
रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ ६ ॥

दशरथात्मजौ राम पशुपतिप्रियौ
शशिनिवासिनौ राम विशदमानसौ ॥
दशमुभान्तकौ राम निशितसायकौ
रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ ७ ॥

कमल लोचनौ राम समरपण्डितौ
भीमविग्रहौ राम कामसुन्दरौ ॥
दाम्भूषणौ राम हेमनूपुरौ
रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ ८ ॥

भरतसेवितौ राम दुरितमोचकौ
करधृताशुगौ राम सूकरस्तुतौ ॥
शरधि धारणौ राम धीरकवचिनौ
रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ ९ ॥

धर्मचारिणौ राम कर्मसाक्षिणौ
धर्मकार्मुजौ राम शर्मदायकौ ॥

धर्मशोभितौ राम कर्मभोदिनौ
रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ १० ॥

नीलदेहिनौ राम लोलकुण्डलौ
कालभीकरौ राम वालिमर्दनौ ॥
कलुषहारिणौ राम ललितभूषणौ
रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ ११ ॥

मातृनन्दनौ राम भद्रबालकौ
भ्रातृ सम्मतौ राम शत्रुसूदकौ ॥
भ्रातृशेखरौ राम सेतुनायकौ
रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ १२ ॥

शरधिबन्धनौ राम हलितद्वानवौ
कुलविवर्धनौ राम बलविराजितौ ॥
सोलज्जितौ राम बलविराजितौ
रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ १३ ॥

राजलक्षणौ राम विजय कङ्क्षिणौ
गजवरारुहौ राम पूजितामरौ ॥
विजितमत्सरौ राम भजितवारणौ
रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ १४ ॥

सर्वमानितौ राम सर्वकारिणौ
गर्वभञ्जनौ राम निर्विकारणौ ॥

दुर्विभासितौ राम सर्वभासकौ
रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ १५ ॥

रविकुलोद्भवौ राम भवविनाशकौ
कानकाश्रितौ राम पादकोशकौ ॥
रविसुतप्रियौ राम कविभिरीडितौ
रहसि नौमि तौ सीतारामलक्ष्मणौ ॥ १६ ॥

राम राघव सीता राम राघव
राम राघव सीता राम राघव ॥
कृष्णकेशव राधा कृष्णकेशव
कृष्णकेशव राधा कृष्णकेशव ॥ १७ ॥

सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम ॥
सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम ॥ १८ ॥

This text is from the book Stutimanimala
(pp 84–89) compiled by Kallidaikurichi
Shri. K.S. Ramakrishna Sastrigal (1965).
The meaning of the first two stanzas of
the stotram is as follows:

I salute in private Sitaram and Laxman

who are lotus-eyed, wearing dresses with gold,
armoury as ornaments , who destroy all filth,
and who give all that are desired.

I salute in private Sitaram and Laxman
who wear the ear ring of makar, crown with
precious stone, sweet tongued, born of
illustrious clan of manu, and who are
exemplary citizens of human race.

There are 16 stanzas of similar types.

Two more stanzas are invocations of Ram and Krishna.

The tune is like that of Gopika Gitam.

Encoded by Prof. T. Madhavan" (madhavan at Imahd.ernet.in)

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

Last updated ८५oday

<http://sanskritdocuments.org>

Sita Rama Geetham Lyrics in Gujarati PDF

% File name : sitaramagiitam.itx

% Category : gItam

% Location : doc_raama

% Language : Sanskrit

% Subject : philosophy/hinduism/religion

% Latest update : October 1, 2010

% Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

% Site access : <http://sanskritdocuments.org>

%

% This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study

% and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of

% any website or individuals or for commercial purpose without permission.

% Please help to maintain respect for volunteer spirit.
%

We acknowledge well-meaning volunteers for Sanskritdocuments.org and other sites to have built the collection of Sanskrit texts.

Please check their sites later for improved versions of the texts.

This file should strictly be kept for personal use.

PDF file is generated [October 13, 2015] at Stotram Website